

मर्कटः

ओ ! प्राणी तेरो ^{३३३३} मतलब को संसार ^{३३३३} ॥२॥

शीश झुकाकर, काम जो लेते ^{३३३३}

बदले में बातें कह लेते

आँखे फेरीं सारे जग ने ^{३३३३} ॥२॥

निकल गया जब सार ^{३३३३}

सार ^{३३३३३३३३} निकल गया जब सार

ओ ! प्राणी तेरो -----

भूखे प्यासे जग में भटके ^{३३३३३३}

कर्म के कारण, हम जो अटके

खूब मिला मानव से हमको ^{३३३३३३} ॥२॥

बह गये धारई धार ^{३३३३३३}

धार ^{३३३३३३३३३३} बह गये धारई धार

ओ ! प्राणी तेरो -----

हरि कथा से, दूर ये भगते ॥३३३॥
 रात-रात भर हम भी जगते
 बिन आवाज, गीत तेरे गाये ॥३३३॥ ॥२॥

टूट गये सब तार ॥३३३॥
 तार ॥३३३३३३॥ टूट गये सब तार
 ओ ! प्राणी तेरे-----

गर मालूम, हमें ये होता ॥३३३॥
 गैरों के दुख में क्यों रोता ॥३३३॥
 "श्री बाबा श्री" अब, तो जरा चेत्तो ॥३३३॥ ॥२॥
 बड़ी समय की मार ॥३३३३३॥ ॥२॥
 ओ ! प्राणी तेरे-----